This question paper contains 3 printed pages]

7/12/17

Roll No. | | | | | | | | | | | |

S. No. of Question Paper : 2664

Unique Paper Code : 12051301

Name of the Paper : Hindi Sahitya Ka Itihas (Aadhunik Kaal)

Name of the Course : B.A. (Hons.) Hindi—CBCS

Semester : III

DESHBANDHU COLLEGE LIBRARY Kalkaji, New Delhi-19
HC

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।)

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. मध्यकालीन बोध तथा आधुनिक बोध में अन्तर स्पष्ट करते हुए आधुनिकता की अवधारणा स्पष्ट कीजिए।

अथवा

हिंदी पत्रकारिता के विकास में महावीर प्रसाद द्विवेदी के योगदान की चर्चा कीजिए। 15

2. हिंदी उपन्यास की क्रमिक विकास-यात्रा का विवेचन कीजिए।

अथवा

हिंदी निबंध की विकास यात्रा में शुक्ल-युगीन निबन्धकारों के योगदान की समीक्षा कीजिए। 15

3. उत्तर-छायावादी काव्य की मुख्य प्रवृत्तियों का बीज छायावादी काव्य में ही निहित था—विचार करते हुए इसकी मुख्य विशेषताओं का विश्लेषण कीजिए।

अथवा

नई कविता परम्परागत कविता से आगे नवीन भाव बोध और नवीन शिल्प विधान की कविता है, इस आधार पर नई कविता की साहित्यिक प्रवृत्तियों का उद्‌घाटन कीजिए। 15

4. साठोत्तरी कविता अपने परिवेश एवं प्रवृत्तियों में पिछले साहित्य से जुड़े होने पर भी अपनी अलग पहचान रखती है—विचार करते हुए साठोत्तरी कविता की मूल प्रवृत्तियों का विश्लेषण कीजिए।

अथवा

समकालीन हिंदी कहानी की प्रमुख विशेषताओं पर प्रकाश डालिए। 15

5. किन्हीं दो पर टिप्पणी लिखिए : 8,7

(क) नवजागरण और भारतेन्दु मण्डल

(ख) आत्मकथा साहित्य

(ग) प्रगतिवाद

(घ) नवगीत।

This question paper contains 4 printed pages]

Roll No. | | | | | | | |2|6|1|7|

S. No. of Question Paper : 2665 (2)

Unique Paper Code : 12051302 HC

Name of the Paper : Adhunik Kavita (Adhunik Kal Chhayawaad Tak)

Name of the Course : B.A. (Hons.) Hindi—CBCS

Semester : III

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

DESHBANDHU COLLEGE LIBRARY Kalkaji, New Delhi-19

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।)

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. किन्हीं **दो** की सप्रसंग व्याख्या कीजिये : 8+7

(क) उठ-उठ री लघु-लघु लोल लहर!
करुणा की नव अंगराई-सी,
मलयानिल की परछाई-सी,
इस सूखे तट पर छिटक छहर
शीतल कोमल चिर कम्पन-सी,
दुर्ललित हठीले बचपन-सी,
तू लौट कहाँ जाती है री-
यह खेल खेल ले ठहर-ठहर!

अथवा

दिए हैं मैंने जगत को फूल-फल
किया है अपनी प्रभा से चकित-चल;
पर अनश्वर था सकल पल्लवित पल-
ठाठ जीवन का वही
जो ढह गया है।

(ख) पीसा जाता जब इक्षु-दंड, झरती रस की धारा अखंड,
मेहँदी जब सहती है प्रहार, बनती ललनाओं का शृंगार,
जब फूल पिरोये जाते हैं,
हम उनको गले लगाते हैं।
वसुधा का नेता कौन हुआ ? भूखंड विजेता कौन हुआ ?
अतुलित यश-क्रेता कौन हुआ ? नव-धर्म-प्रणेता कौन हुआ ?
जिसने ना कभी आराम किया,
विघ्नों में रह कर नाम किया।

अथवा

कैसे करूँ कीर्तन, मेरे स्वर में है माधुर्य नहीं।
मन का भाव प्रकट करने को वाणी में चातुर्य नहीं॥
नहीं दान है, नहीं दक्षिणा खाली हाथ चली आई॥
पूजा की विधि नहीं जानती फिर भी नाथ चली आई॥

2. मैथिलीशरण गुप्त की काव्यगत विशेषताओं का विश्लेषण कीजिये। 12

अथवा

'स्त्री-अधिकार एवं त्याग का द्वंद्व यशोधरा की मूल समस्या है'—इस कथन का पाठ के आधार पर विवेचन कीजिये।

3. जयशंकर प्रसाद की काव्यगत विशेषताएँ लिखिए। 12

अथवा

'लहर' के आधार पर प्रसाद की प्रेमानुभूति पर विचार कीजिए।

4. निराला की काव्यगत विशेषताओं का उदाहरण सहित उल्लेख कीजिये। 12

अथवा

'तोड़ती पत्थर' कविता निराला की काव्य-संवेदना को कई अर्थों में छायावाद के घेरे से बाहर लाती है। इस कथन पर विचार कीजिये।

5. 'रश्मिरथी' काव्य के आधार पर 'कर्ण' का चरित्र-चित्रण कीजिये। 12

अथवा

'वीरों का कैसा हो वसंत' कविता की मूल संवेदना लिखिए।

6. दिए गए निर्देशों के आधार पर किन्हीं **दो** पद्यांशों का रचना-कौशल लिखिए : 6+6

(क) ले चल वहाँ भुलावा देकर,
मेरे नाविक! धीरे-धीरे।
जिस निर्जन में सागर लहरी,
अंबर के कानों में गहरी-
निश्छल प्रेम-कथा कहती हो,
तज कोलाहल की अवनी रे।

(भाव सौंदर्य)

(ख) हँसता है तो केवल तारा एक
गुँथा हुआ उन घुँघराले काले बालों से,
हृदय-राज्य की रानी का वह करता है अभिषेक।
अलसता की-सी लता
किन्तु कोमलता की वह कली,
सखी नीरवता के कंधे पर डाले बाँह,
छाँह-सी अम्बर-पथ से चली।

(प्रकृति-सौंदर्य)

(ग) प्रियतम! तुम श्रुति पथ से आये।
तुम्हें हृदय में रख कर मैंने अधर कपाट लगाए।
मेरे हास-विलास! किन्तु क्या भाग्य तुम्हें रख पाए ?
दृष्टि मार्ग से निकल गए ये तुम रसमय मनभाये।

(वियोगानुभूति)

This question paper contains 4 printed pages]

14/12/17

Roll No. | | | | | | | | | | | |

(3)

DESHBANDHU COLLEGE
HC
LIBRARY
Kalkaji, New Delhi-19

S. No. of Question Paper : **2666**

Unique Paper Code : **12051303**

Name of the Paper : **Hindi Kahani**

Name of the Course : **B.A. (Hon.) Hindi—CBCS**

Semester : **III**

Duration : **3 Hours** Maximum Marks : **75**

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।)

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. 'पूस की रात' कहानी के आधार पर हल्कू का चरित्र-चित्रण कीजिए। 12

अथवा

'छोटा जादूगर' कहानी की मूल संवेदना पर प्रकाश डालिए।

2. 'तीसरी कसम' कहानी के आधार पर हिरामन की चारित्रिक विशेषताएँ लिखिए। 12

अथवा

'चीफ की दावत' कहानी का प्रतिपाद्य लिखिए।

3. कहानी के तत्त्वों के आधार पर 'परिंदे' की समीक्षा कीजिए। 12

अथवा

'दोपहर का भोजन' कहानी में चित्रित मूल समस्या पर विचार कीजिए।

4. 'सिक्का बदल गया' कहानी के शीर्षक की सार्थकता पर विचार कीजिए। 12

अथवा

जीवनभर परिवार की बेहतरी के लिए चिंतित रहने वाले गजाधर बाबू रिटायरमेंट के बाद अपने घर में ही बाहरी क्यों हो जाते हैं ? 'वापसी' कहानी के आधार तर्कपूर्ण उत्तर दीजिए।

5. निम्नलिखित गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 9+9+9=27

(क) तुम्हें याद है, एक दिन तांगे वाले का घोड़ा दही की दुकान के आगे बिगड़ गया था। तुमने उस दिन मेरे प्राण बचाये थे। आप घोड़े की लातों में चले गए थे और मुझे उठाकर दुकान के तख्ते पर खड़ा कर दिया था। ऐसे ही इन दोनों को बचाना। यह मेरी भिक्षा है। तुम्हारे आगे मैं आँचल पसारती हूँ।

अथवा

दस बज चुका था। मैंने देखा कि उस निर्मल धूप में सड़क के किनारे एक कपड़े पर छोटे जादूगर का रंगमंच सजा था। मोटर रोककर उतर पड़ा। वहाँ बिल्ली रूठ रही थी। भालू मनाने चला था। ब्याह की तैयारी थी; यह सब होते हुए भी जादूगर की वाणी में वह

प्रसन्नता की तरी नहीं थी। जब वह औरों को हँसाने की चेष्टा कर रहा था, तब जैसे स्वयं कांप जाता था।

(ख) हिरामन आज सुबह से तीन बार लदनी लाद कर स्टेशन आ चुका है। आज न जाने क्यों उसको अपनी भौजाई की याद आ रही है..... धुन्नीरा ने कुछ कह तो नहीं दिया है, बुखार की झोंक में। यहीं कितना अटर-पटर बक रहा था— गुलबदन, तख्त-हजारा ! लहसनवां मौज में है। दिन-भर हीराबाई को देखता होगा। कल कह रहा था, हिरामन मालिक, तुम्हारे अकबाल से खूब मौज में हूँ।

अथवा

गलियारे की सीढ़ियाँ न उतरकर लतिका रेलिंग के सहारे खड़ी हो गयी। लैम्प की बत्ती को नीचे घुमाकर कोने में रख दिया। बाहर धुंध की नीली तहें बहुत घनी हो चली थीं। लॉन पर लगे हुए चीड़ के पत्तों की सरसराहट हवा के झोंकों के संग कभी तेज, कभी धीमी होकर भीतर बह आती थी। हवा में सर्दी का हल्का सा आभास पाकर लतिका के दिमाग में कल से शुरू होने वाली छुट्टियों का ध्यान भटक आया।

(ग) गजाधर बाबू ने आहत दृष्टि से पत्नी को देखा, उन्होंने अनुभव किया कि वह पत्नी और बच्चों के लिए केवल धनोपार्जन के निमित्त मात्र हैं। जिस व्यक्ति के अस्तित्व से पत्नी मांग में सिंदूर डालने की अधिकारिणी है, समाज में उसकी प्रतिष्ठा है, उसके सामने वह दो वक्त भोजन की थाली रख देने से सारे कर्तव्यों से छुट्टी पा जाती है। वह घी और चीनी के डिब्बों में इतनी रमी हुई है कि अब वही उसकी सम्पूर्ण दुनिया बन गयी है।

अथवा

राकेश काठ की तरह जड़ हो गया था। रमेश चौधरी की भर्राई आवाज जैसे हज़ारों मील दूर से आ रही थी। जिसे वह ठीक से सुन नहीं पा रहा था जैसे रमेश चौधरी किसी गहरी खाई में खड़ा है। जहाँ से प्रतिध्वनित होकर आ रही आवाज धीमी हो गयी थी। जिसे सुन पाना राकेश के लिए कठिन महसूस हो रहा था।

This question paper contains 4+1 printed pages]

Roll No. | | | | | | | | 2 | 0 | 1 | 7 |

(4)

DESHBANDHU COLLEGE LIBRARY Kalkaji, New Delhi-19

S. No. of Question Paper : 2753

Unique Paper Code : 12055105

Name of the Paper : हिन्दी कहानी

Name of the Course : B.A. (Hons.) Hindi

Semester : I/III (CBCS)

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।)

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. 'छोटा जादूगर' की मूल संवेदना पर विचार कीजिए। 12

अथवा

'उसने कहा था' के कथ्य का विवेचन कीजिए।

2. 'पाजेब' के छुन्नू की मन:स्थिति पर प्रकाश डालिए। 12

P.T.O.

अथवा

'तीसरी कसम' के हिरामन की चारित्रिक विशेषताएँ स्पष्ट कीजिए।

3. 'सिक्का बदल गया' **अथवा** 'दोपहर का भोजन' कहानी के शीर्षक की प्रतीकात्मकता स्पष्ट कीजिए। 12

4. 'घुसपैठिए' **अथवा** 'वापसी' कहानी की मूल समस्या पर विचार कीजिए। 12

5. निम्नलिखित गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 3×9=27

(क) एक घंटा और गुजर गया। रात ने शीत को हवा में धधकाना शुरू किया। हल्कू उठ बैठा और दोनों घुटनों को छाती से मिलाकर सिर को उसमें छिपा लिया, फिर भी ठंड कम न हुई। ऐसा जान पड़ता था, सारा रक्त जम गया है, धमनियों में रक्त की जगह हिम बह रहा था। उसने झुककर आकाश की ओर देखा, अभी कितनी रात बाकी है। सप्तर्षि अब भी आकाश में आधे भी नहीं चढ़े। ऊपर आ जाएँगे, तब कहीं सवेरा होगा। अभी पहर से ऊपर रात है।

अथवा

कार्निवल के मैदान में बिजली जगमगा रही थी। हँसी और विनोद का कल-निनाद गूँज रहा था। मैं खड़ा था, उस छोटे से फौव्वारे के पास, जहाँ एक लड़का चुपचाप शराब पीनेवालों को देख रहा था। उसके गले में फटे कुरते के ऊपर से एक मोटी-सी सूत की रस्सी पड़ी थी और जेब में कुछ ताश के पत्ते थे। उसके मुँह पर गम्भीर विषाद के साथ धैर्य की रेखा थी। मैं उसकी ओर न जाने क्यों आकर्षित हुआ।

(ख) आखिर पाँच बजते-बजते तैयारी मुकम्मल होने लगी। कुर्सियाँ, मेज, तिपाइयाँ, नैपकीन, फूल, सब बरामदे में पहुँच गए। ड्रिंक का इंतजाम बैठक में कर दिया गया। अब घर का फालतू सामान आलमारियों के पीछे और पलंग के नीचे छिपाया जाने लगा। तभी शामनाथ के सामने सहसा एक अड़चन खड़ी हो गयी, माँ का क्या होगा ?

अथवा

एक तो पीठ में गुदगुदी लग रही है। दूसरे रह-रहकर चंपा का फूल खिल जाता है उसकी गाड़ी में। बैलों को डाँटों तो 'इस-बिस' करने लगती है उसकी सवारी! .... उसकी सवारी! औरत अकेली, तंबाकू बेचने वाली बूढ़ी नहीं। आवाज सुनने के बाद वह बार-बार मुड़कर टप्पर में एक नज़र डाल देता है, अँगोछे से पीठ झाड़ता है। .... भगवान जाने क्या लिखा है इस बार उसकी किस्मत में! गाड़ी जब पूरब की ओर मुड़ी, एक टुकड़ा चाँदनी उसकी गाड़ी में समा गई। सवारी की नाक पर एक जुगनू जगमगा उठा। हिरामन को सब कुछ रहस्यमय-अजगुत-अजगुत-लग रहा है।

(ग) हवेली आ गई। शाहनी ने शून्य मन से ड्योढ़ी में कदम रक्खा। शेरा कब लौट गया उसे कुछ पता नहीं। दुर्बल-सी देह और अकेली, बिना किसी सहारे के! न जाने कब तक वहीं पड़ी रही शाहनी। दुपहर आई और चली गई। हवेली खुली पड़ी है। आज शाहनी नहीं उठ पा रही। जैसे उसका अधिकार आज स्वयं ही उससे छूट रहा है! शाहजी

के घर की मालकिन.... लेकिन नहीं, आज मोह नहीं हट रहा है! मानो पत्थर हो गई हो। पड़े-पड़े साँझ हो गई, पर उठने की बात फिर भी नहीं सोच पा रही।

अथवा

"हे भद्र, हमारे पूर्वजों और मनुष्यों का बड़ा ही अंतरंग सम्बन्ध रहा है। उनके लिए हम अपने पुष्प, अपने बीच छिपी सारी संपदा, कंद-मूल, फल, पशु-पक्षी सब कुछ निछावर कर चुके हैं और आज भी करने के लिए प्रस्तुत हैं। विश्वास करें, शुरू से ही कुछ ऐसा नाता रहा है कि हमें भी उनके बिना खास अच्छा नहीं लगता। जवाब में उन्होंने भी हमें भरपूर प्यार दिया है। लेकिन आप ?.... हमें संदेह है कि आप मनुष्य हैं!"